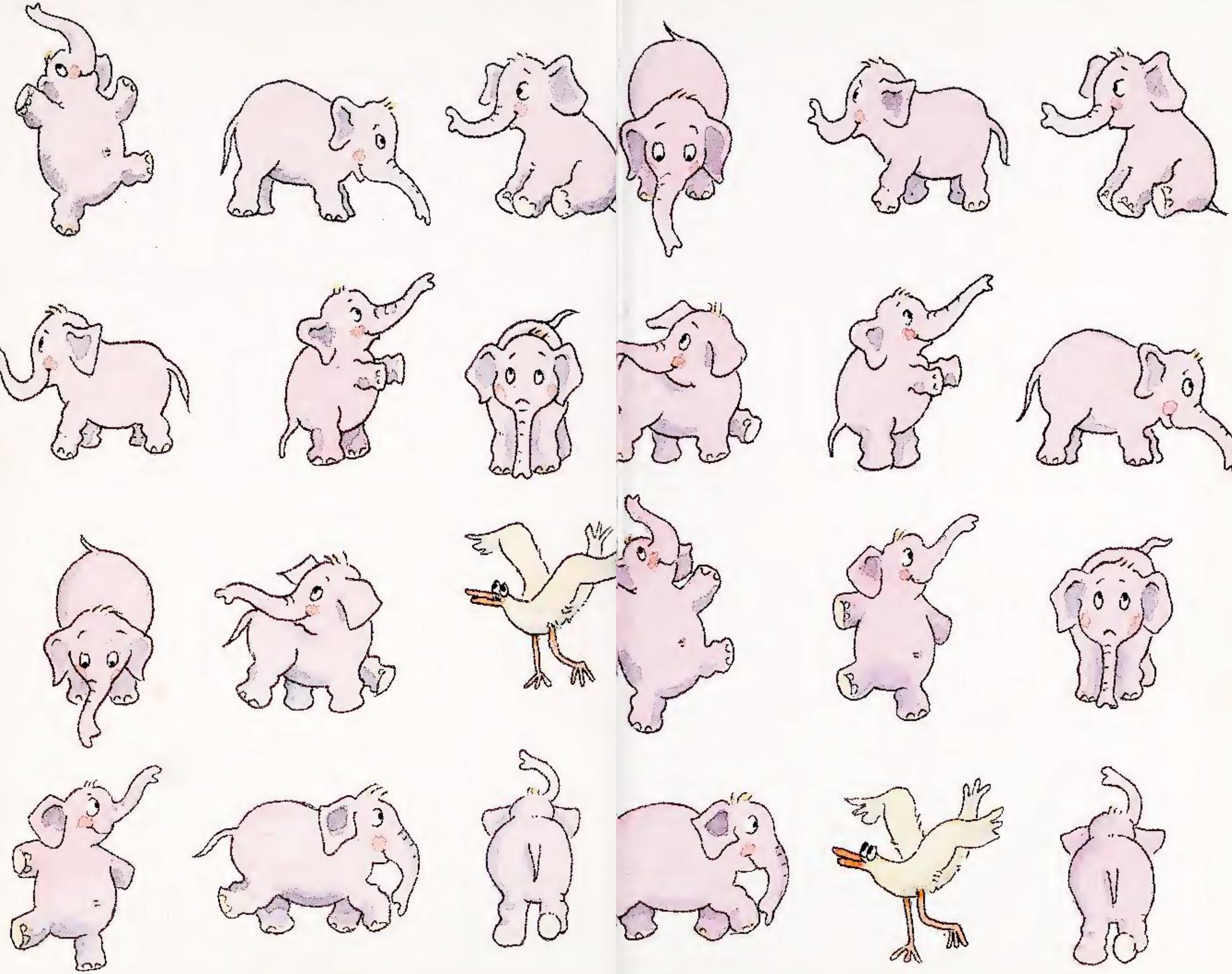
प्रतिभाशाली छोटी हाथी

जोन स्टीमसन

चित्र: डेविड पेस

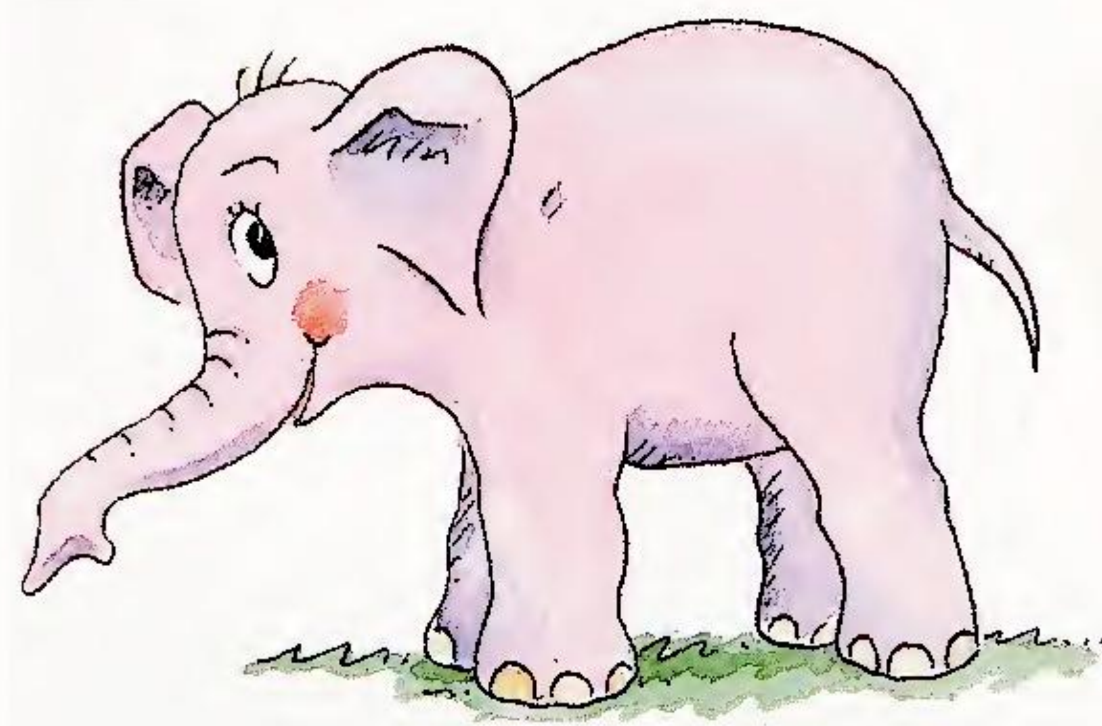
हिंदी: विजय चंद्र प्रकाश





प्रतिभाशाली छोटी हाथी

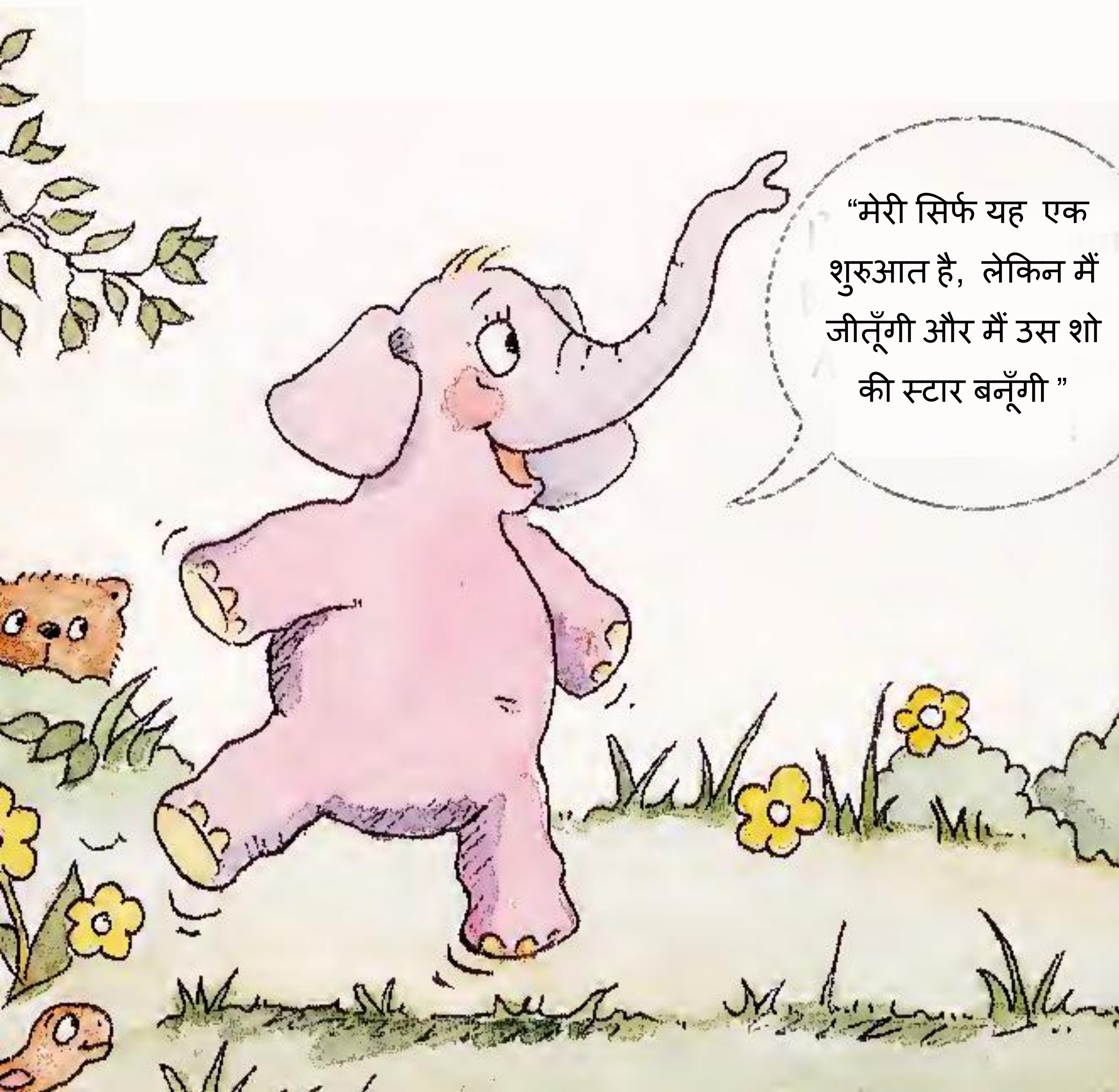
जोन स्टीमसन
चित्र: डेविड पेस
हिंदी: विजय चंद्र प्रकाश



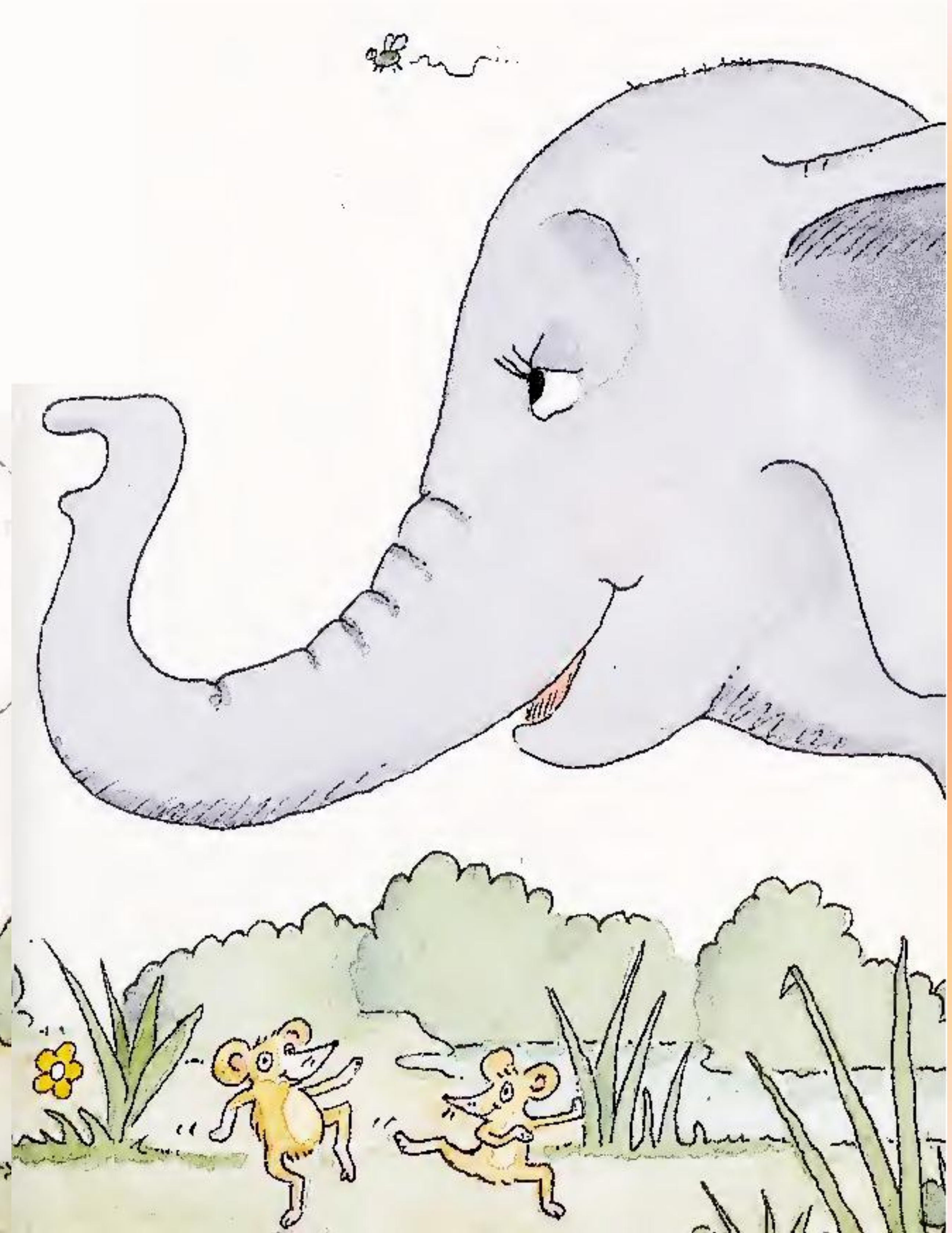
जैसे ही उस ने यह शानदार खबर सुनी छोटी हाथी इस के बारे मे बात करना बंद ही नही कर पाई।

झुंड के मुखिया ने बड़े-शो की तारीख की घोषणा कर दी थी। और इस साल छोटी हाथी को भी उस में शामिल होने की अनुमित मिल गई थी।

छोटी हाथी अपनी माँ के चारो ओर नाचने कूदने लगी और खुशी से चिल्लाने लगी।

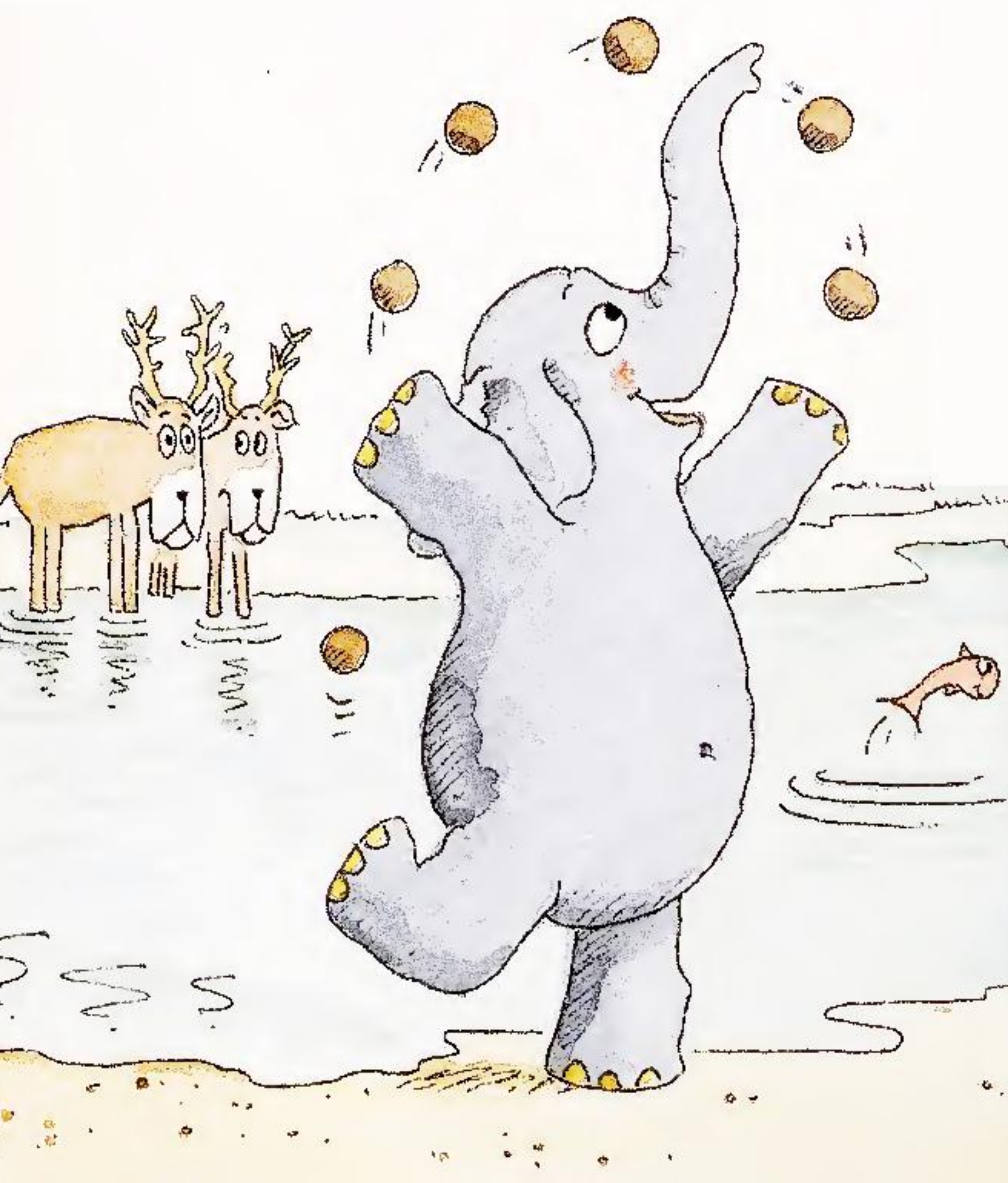


“तुम्हारे लिए यही बेहतर होगा कि तुम तय कर लो कि तुम क्या करने वाली हो,“ माँ मुस्कुराती हुई बोली! “और अभ्यास करना शुरू कर दो।”



छोटी हाथी चल दी और विचार करने लगी कि उसे क्या करना चाहिए।

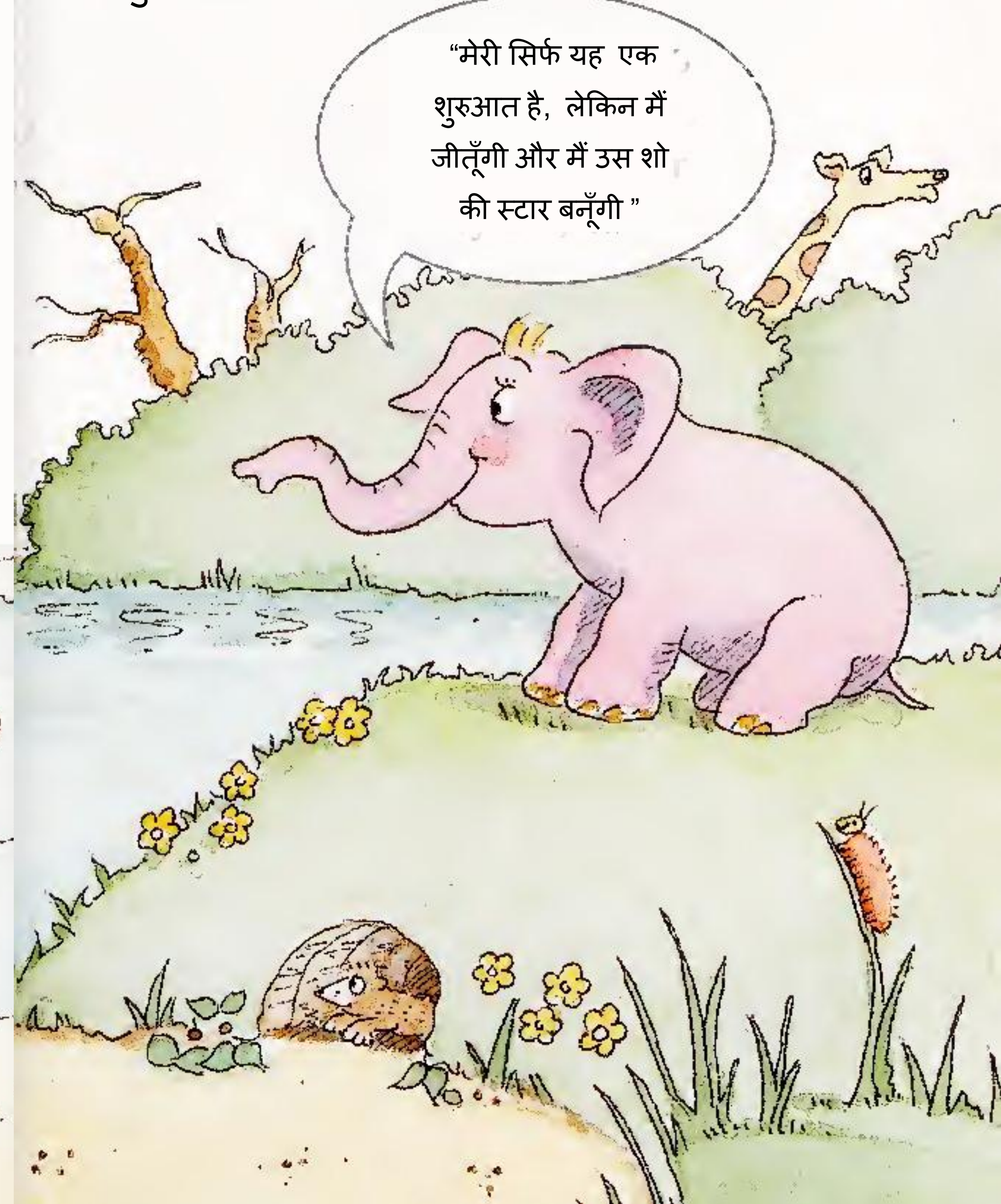
छोटी हाथी की चचेरी बहन ने कहा, “मुझे देखो, मैंने मिट्टी के गोले बनाए हैं और मैं उनसे जगलिंग कर रही हूँ।”



छोटी हाथी ने उसे ग़ौर से देखा और कहा, “ ये तो लाजवाब है।”

“मैं भी कोशिश करती हूँ।“

फिर उसने भी अपने लिए मिट्टी के गोले बनाना शुरू कर दिए।



परन्तु गोलों से बाजीगरी करना दिखने में जितना आसान था उतना ही वह करने में कठिन भी था ।

एक के बाद एक मिट्टी का गोला उसकी नाक से टकराया।

“उई माँ!“ वह दर्द से चीख उठी। फिर वह खुद को साफ करने के लिए झील में कूद गई ।



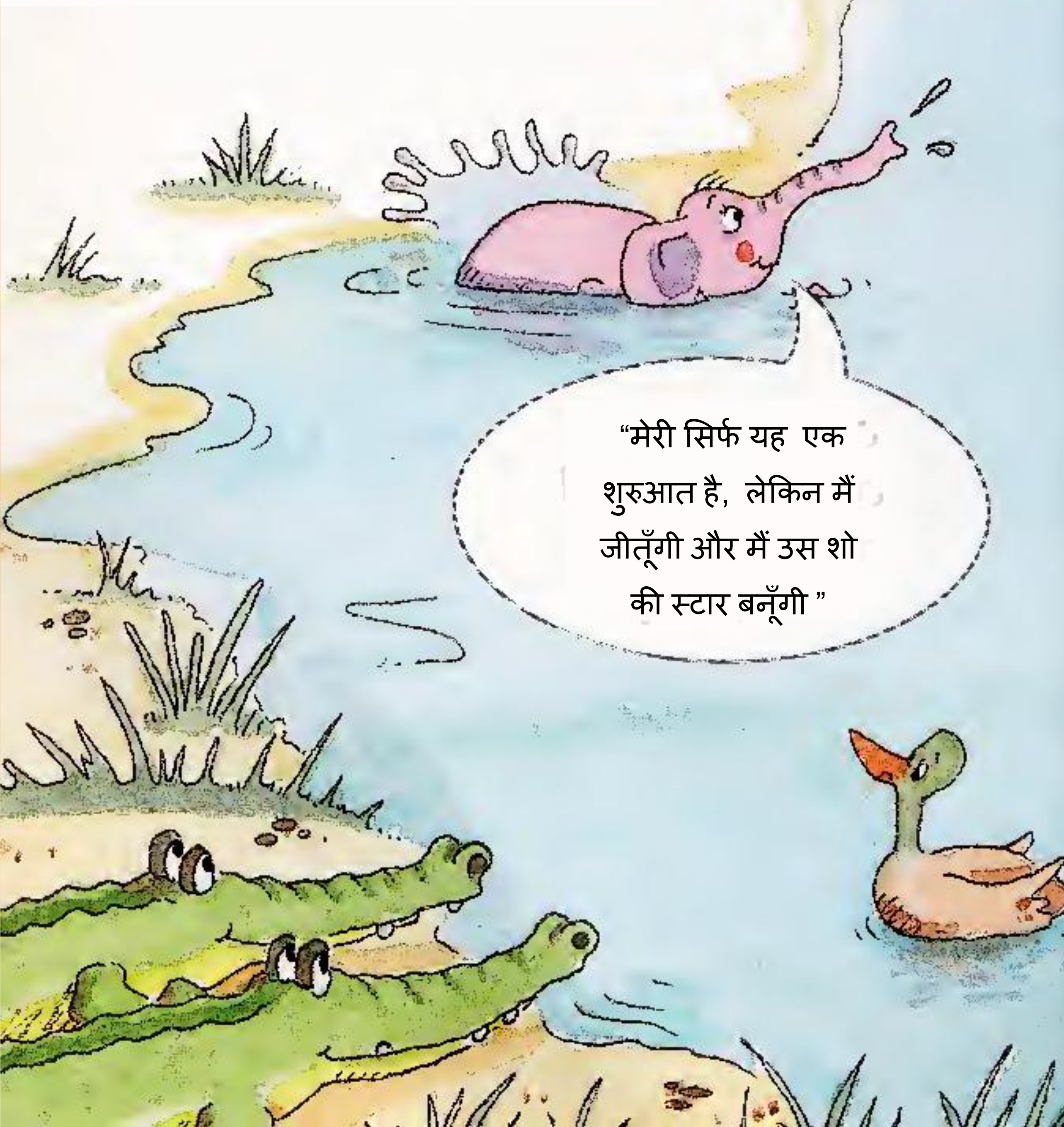


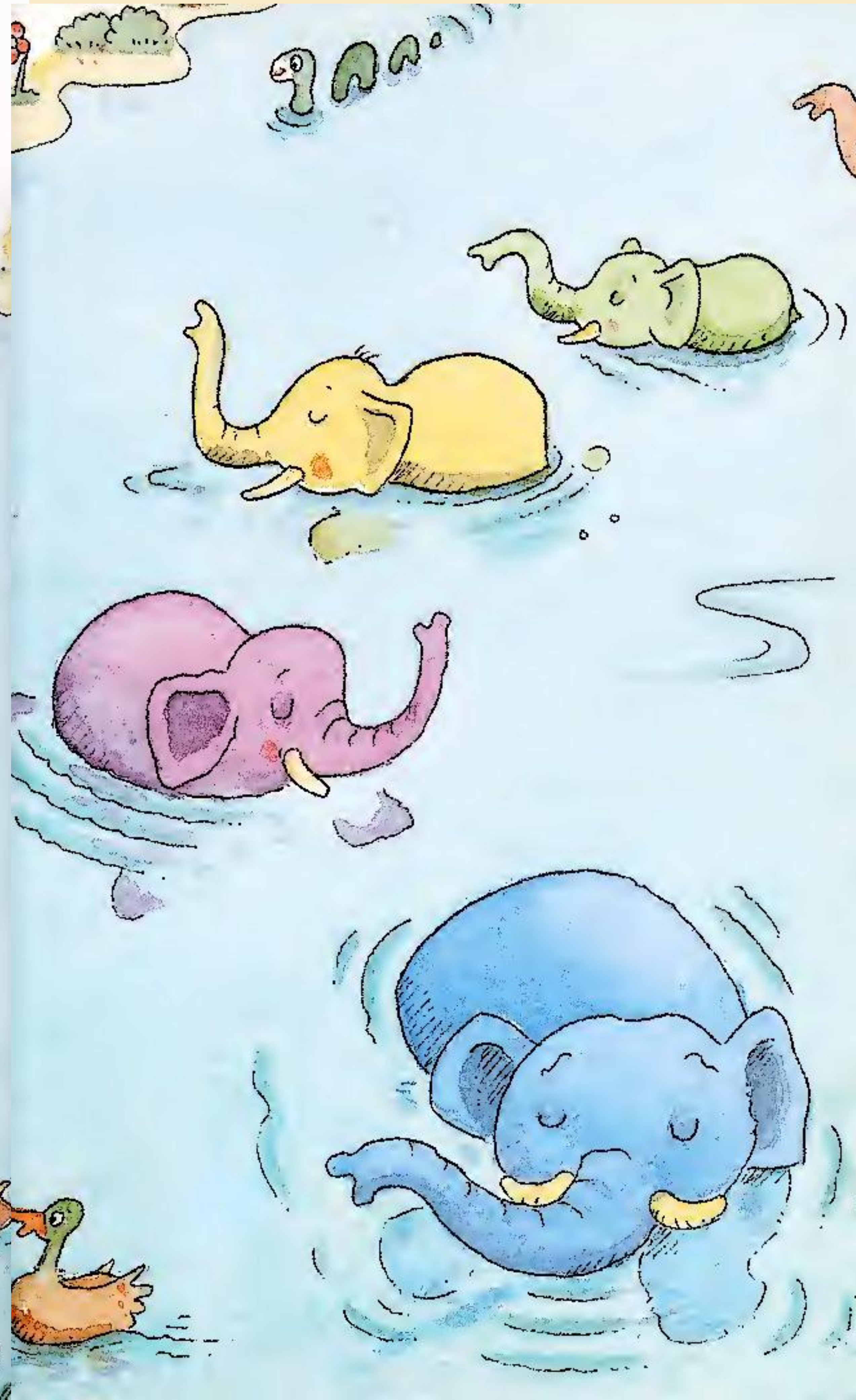
" हमे देखो " झील के बीच से छोटी हाथी के चाचा चिल्लाये। "हम एक साथ मिलकर तैर रहे है।"

छोटी हाथी उन्हें उत्सुकता से देखने लगी।

"यह तो बहुत शानदार है," वह जोर से बोली। "मुझे भी कोशिश करनी चाहिए।"

फिर वह पानी में छप-छप करती हुई पने चाचा के पास चली गई।





लेकिन सबके साथ तैरना जितना आसान लग रहा था, असल में वो उससे कहीं ज्यादा मुश्किल था। और जल्दी ही चाचाओं का समय भी खत्म हो गया।

“माफ़ करना,“ कहती हुई छोटी हाथी झील के किनारे तैरकर आ गई। उसके बाद चाचाओं को झील में तैरने के लिए जगह मिल गई।



किनारे से उसके दोस्त ने आवाज़ लगाई,
“मुझे देखो, मैं अपनी सूंड से बुलबुले उड़ा सकती हूँ।”

छोटी हाथी ने ग़ौर से देखा और कहा,
“ये तो बहुत लाजवाब है!“

और फिर उसने अपनी सूंढ को पानी में डाला
और कहा, “चलो, मैं भी कोशिश करतीं हूँ।”





लेकिन बुलबुले उड़ाना जितना आसान दिखता था वो काम उससे कहीं ज्यादा मुश्किल था। पानी सीधे छोटी हाथी की सूंड़ मे चला गय, और वह छीकंती हुई किनारे पर दौड़ कर पहुँची।



झील के ऊपर झुकी हुई डाल से नन्ही हाथी की चाचियों ने उससे चिल्लाकर कहा, “हमे देखो हम कसरत कर रहीं है।”

नन्हे हाथी ने उत्सुकता से देखा,

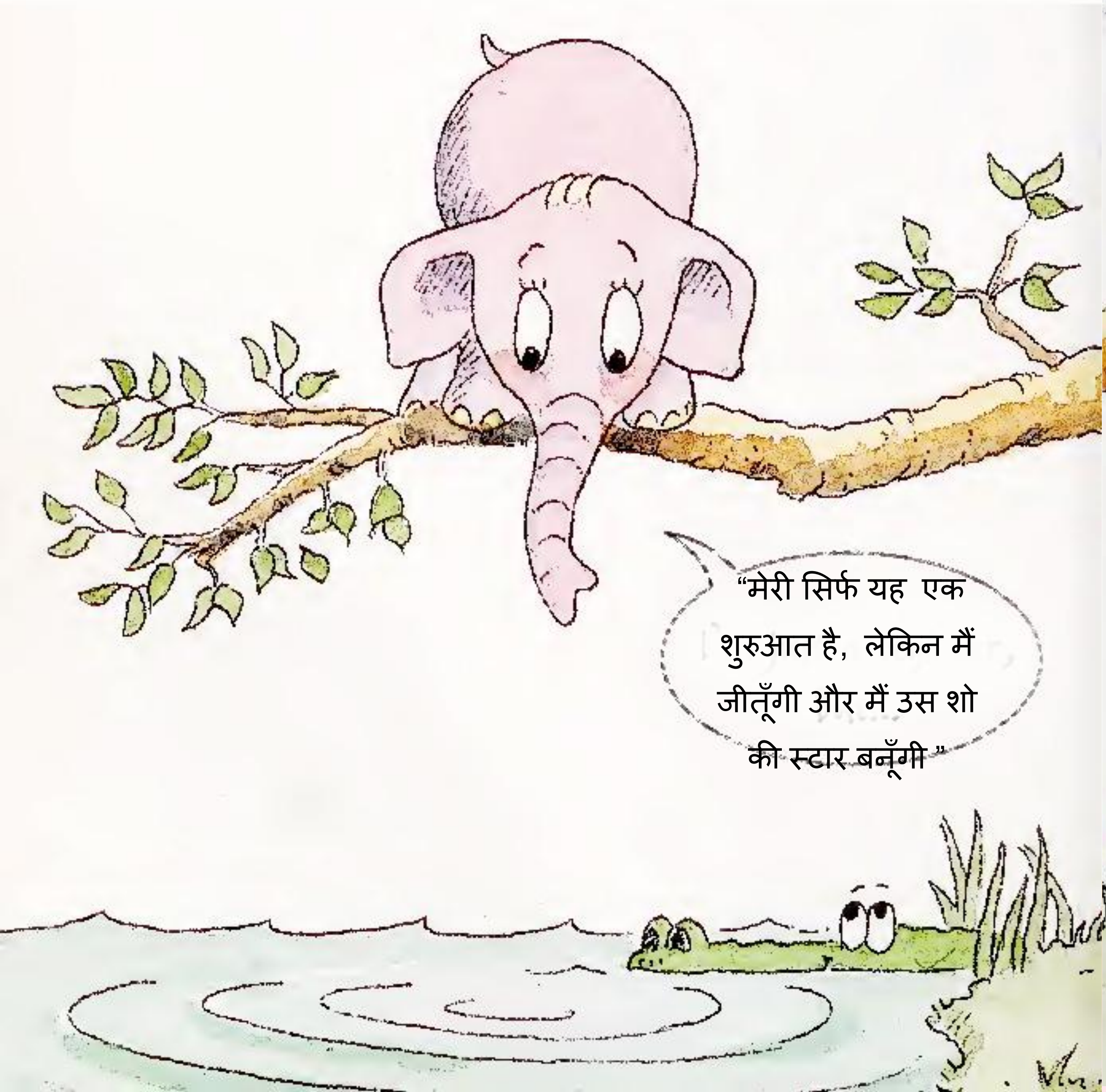
“यह तो लाजवाब है,“ वह खुशी से चीखी। “मैं भी करूंगी!“

और फिर वह उछल कूद करते हुए अपनी चाचियों के पास पहुँच गई।



लेकिन जब छोटी हाथी ने नीचे देखा तो वह डर के मारे सुन्न हो गई। अब वह कसरत नहीं करना चाहती थी।

“कोई बात नहीं छोटी हाथी,” उसकी चाचियों ने कहा। ”आज के बड़े-शो मे ऐसा कुछ जरूर होगा जो तुम कर सकोगी।”



लेकिन छोटी हाथी को अब इस बात पर भरोसा नही था। फिर अचानक उसे अपनी माँ की याद आने लगी।



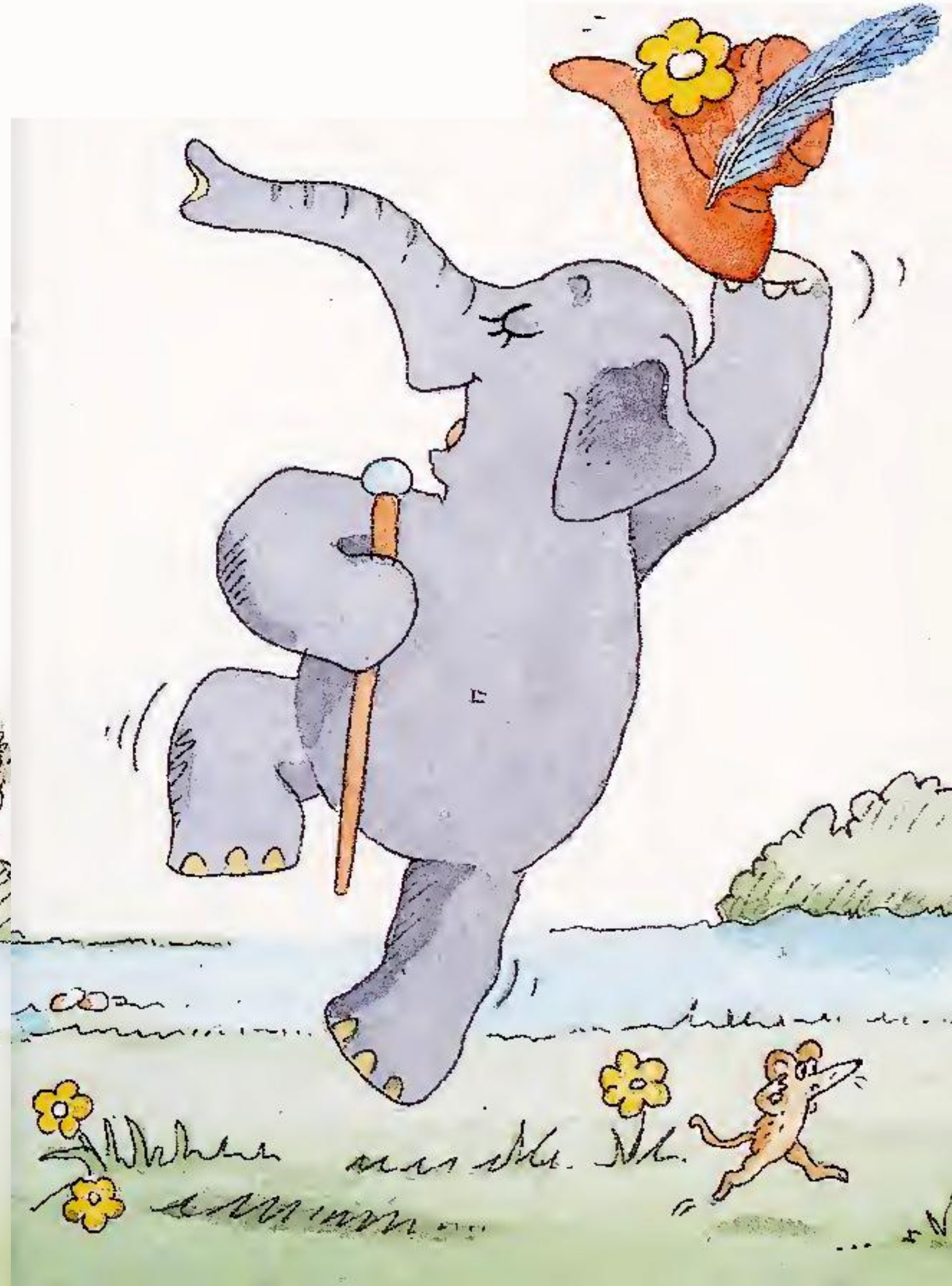
“ मेरी तरफ देखो,“ मां चिल्लाई जैसे ही उसने छोटी हाथी को अपनी तरफ़ धीरे धीरे आते हुए देखा।“

“मैं अपने गाने और नाचने के सही तरीक़े का अभ्यास कर रही हूँ।“

छोटी हाथी अपनी माँ को मन लगाकर सुनने लगी। उसकी मां ने एक कठिन लय-ताल का गाना गाया था। उसने आश्चर्यचकित होकर अपनी माँ के पाँवों को घास पर थिरकते हुए देखा।



“तुम भी इसमें क्यों नहीं शामिल हो जातीं छोटी हाथी,“ माँ ने कहा। लेकिन छोटी हाथी ने सकुचाते हुए अपना सिर हिलाकर मना कर दिया।



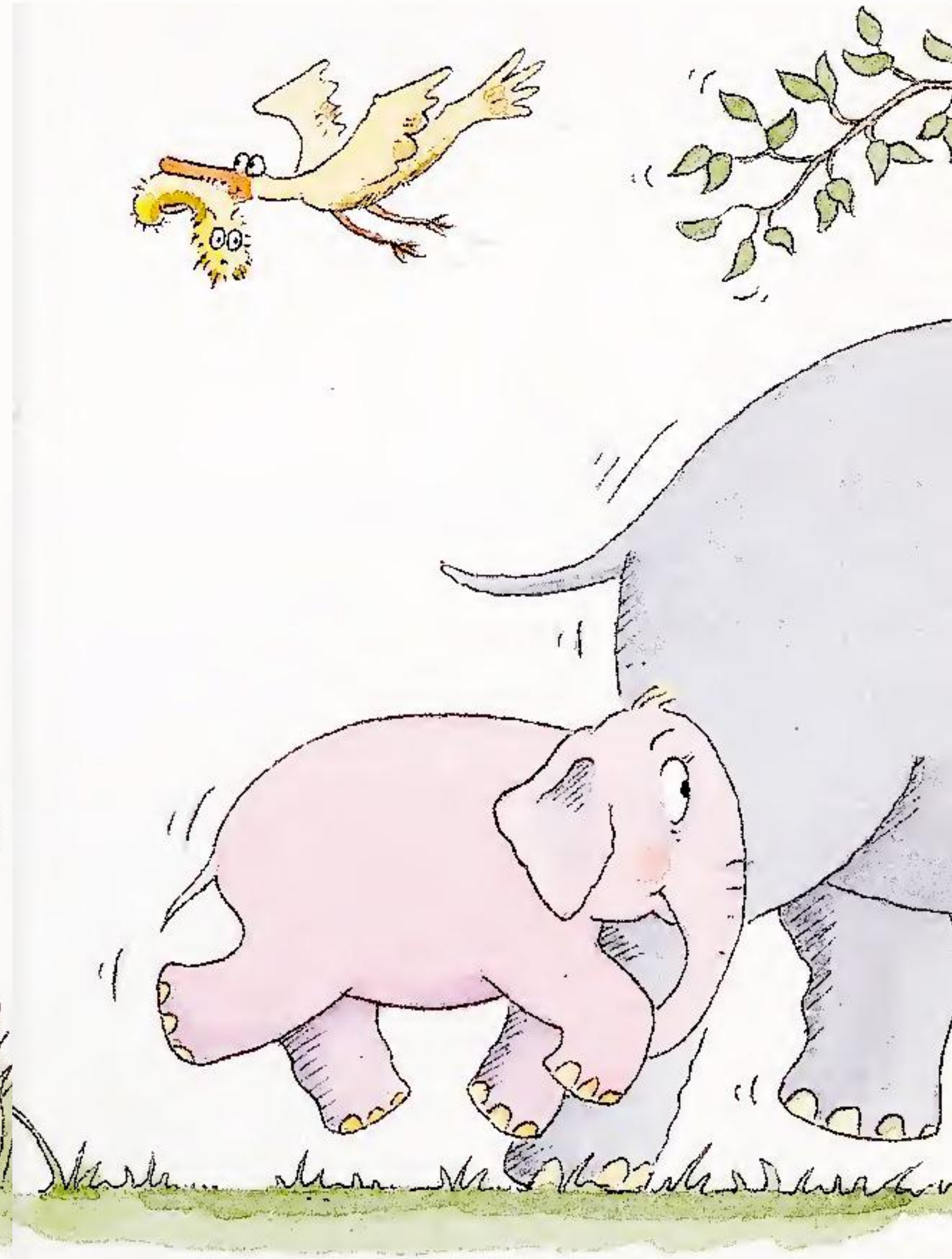
“यह बहुत मुश्किल है,“ कहते हुए छोटी हाथी रुआँसी होकर वहाँ से चली गई।

“माँ ने जो भी तरीक़े बताए थे मैने सब कोशिश करके देख लिए। लेकिन मैं उनमें से एक भी नही कर पा रही हूँ।” छोटी हाथी की माँ ने नाचना बन्द कर दिया और सोचने लगी। आखिरकार उन्हे एक शानदार उपाय सूझा।

“मुझे पता है तुम क्या कर सकती हो, छोटी हाथी,“ माँ हाथी मुस्कराते हुए बोली।

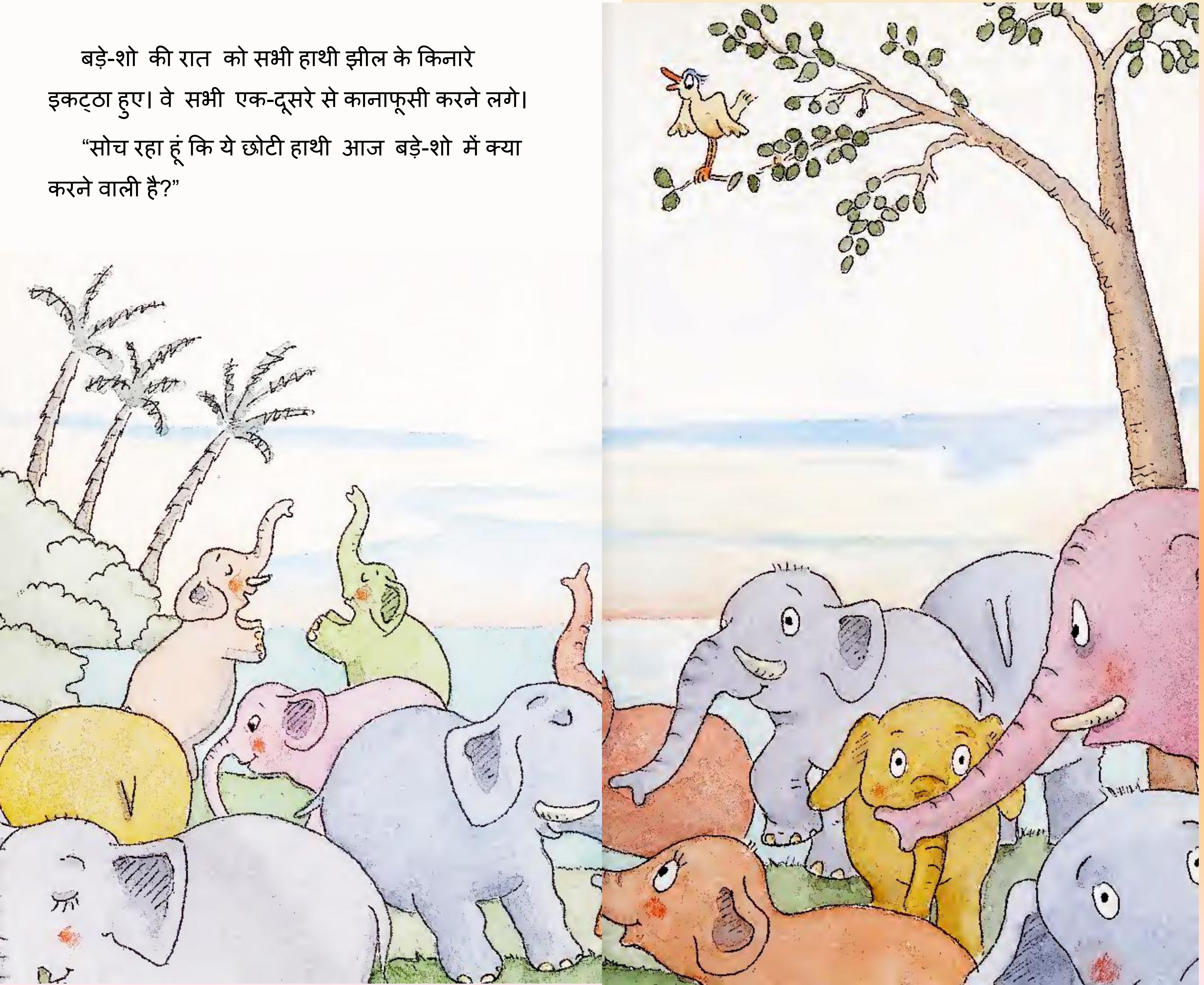


और वो दोनों व्यवस्था तैयारी की करने के लिए झुंड के मुखिया के पास गए।

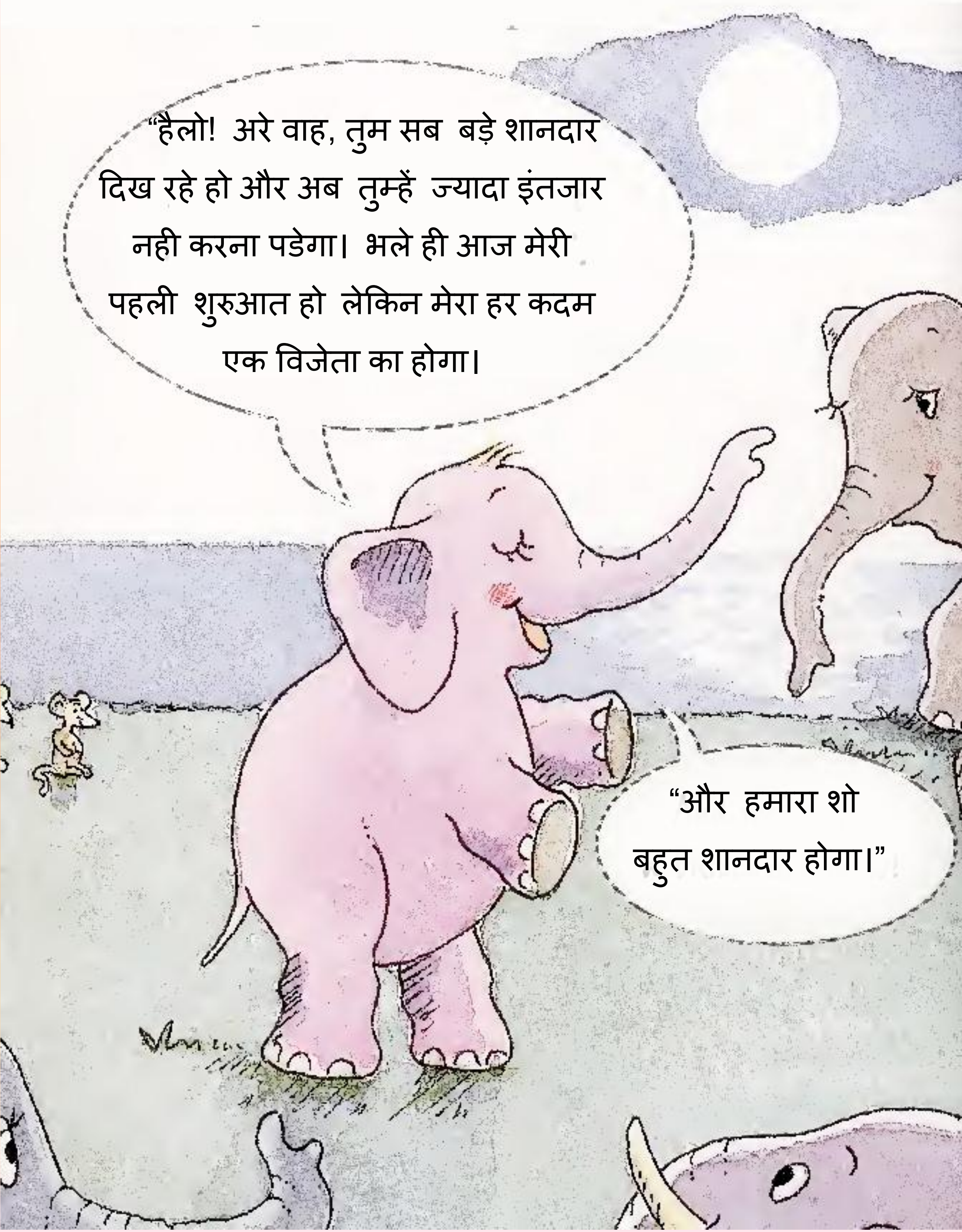


बड़े-शो की रात को सभी हाथी झील के किनारे इकट्ठा हुए। वे सभी एक-दूसरे से कानाफूसी करने लगे।

“सोच रहा हूं कि ये छोटी हाथी आज बड़े-शो में क्या करने वाली है?”



फिर जैसे ही चाँद निकला तब छोटी हाथी स्टेज पर आई और तब सब दर्शक बिल्कुल शांत हो गए। फिर वो गर्व से वह चिंघाड़ उठी।



"हुरे!" सभी हाथी एक साथ चिल्लाए।

"देखो, छोटी हाथी अब बड़े-शो की संचालक बन गई है।"

और चूकिं बाते करना ही छोटी हाथी को सब से ज्यादा अच्छा करना आता था इसलिए उसने बड़े-शो का संचालन बहुत अच्छे तरीके से किया।



